सम्राट अशोक के सप्तम् स्तम्भ लेख का सारांश प्रस्तुत करे।

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति, धार्मिक एवं पुरातत्व के अध्ययन की दृष्टि से प्राचीन भारतीय स्तम्भ लेखों का विशेष महत्व है, भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में भी यह कम महत्वपूर्ण तथ्य नहीं है कि हम प्राचीन भारतीय सभ्यता इतिहास के प्रमाणिक अध्ययन के लिए प्राकृत के प्रमुख स्तम्भलेखों का अध्ययन आवश्यक है।

सप्तम स्तम्भ लेख अशोक ने अपने छब्बीसवें राज वर्ष में अंकित कराया, इसमे उसमें इहलौकिक और पारलौकिक उद्देश्य के प्राप्ति के लिए धर्मकामता जो धर्म के प्रति निष्ठा रखते हो अधिकारियों की नियुक्ति की, धर्म स्थापित किये। धर्म के पालन करने के लिए धर्ममहामात्रों की नियुक्ति की, तथा उन्हें आदेश दिया कि ऐसा कार्य करे ताकि धर्म का कार्य लगातार चलता रहें। सार्वजनिक हित हेतु सड़को पर छायादार वृक्ष लगवाये तथा अनेक कुवें खोदवाए।

इस प्रकार देवों के प्रिय प्रियदर्शी राजा सम्राट अशोक स्वयं कहता है कि मैं छब्बीस वर्षो तक राज्य किया उसके बाद मैंने यह लेख प्रजा के सेवा करने हेतु लिखवाया है। मैंने प्रयास किया कि इस लेख से सभी के अन्दर सेवा तथा धर्म के पालन करने का निर्देश किया गया है। कहा गया है कि ऐसा करने से इस लोक में तो सुख होगा ही और अतः परलोक में भी सुख प्राप्त हो सकें इसलिए धर्म के प्रचार के लिए मैंने धर्म-महामात्य नामक कर्मचारियों को नियुक्त किया ताकि लोगों को सेवा के महत्व को बताये। तथा सम्राट अशोक ने अनेक धार्मिक कार्य किये मनुष्यों, पशुओं के लिए अस्पताल बनवाये, पथिकों के धूप से बचने के लिए छायादार वृक्ष लगवाये एवं जगह-जगह कुवें खोदवाये ताकि प्रजा को किसी प्रकार के कष्ट न सहना पड़े। अशोक सारी प्रजा को अपने संतान की तरह मानता था।

अशोक ने धर्म की परिभाषा बताते हुए कहता है कि धर्म उत्तम है कम से कम पाप, बहुत कल्याण, दया, दान, सत्य एवं पवित्रता, मृदुता, एवं साधुता में वृद्धि हो। अशोक ने धर्म के इन विशिष्ट गुणों को व्यवहारिक जीवन में किस प्रकार पालन करना चाहिए इसकी चर्चा बार-बार अपने लेखों में किया है। धर्मगुण, धर्मानुशासन, धर्माचरण

Scanned with CamScanner

धर्मयात्रा, धर्ममण्डल, धर्मदान का उसने बार-बार उल्लेख किया है और बताया है कि किस प्रकार मनुष्य अपने दैनिक जीवन में दया, दान, सत्य, शौच का व्यवहार कर सकता है। मित्र, परिचित सम्बन्धी, ब्राह्मणों एवं श्रमणों को दान दिया जा सके सत्य बोलकर सत्य का पालन किया जा सके। उसने धर्म की परिभाषा में बताया है कि भय-पशु-हत्या न किया जाय, वाक्य संयम किया जाय, सर्वधर्म को समभाव से देखा जाय, सांसारिक मंगल की अपेक्षा धर्ममंगल श्रेष्ठ है। धर्मोन्नति के लिए पराक्रम आवश्यक है। इस आधार पर उसने शासकों के लिए धर्म-विजय और सच्चे यश का प्रतिपादन किया है।